अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : नवमीं- जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2024)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(i) औदारिक शरीर से सम्बन्धित बारह बोलों में सर्वबंध की स्थिति कितनी है-
(क) 2 समय (ख) 3 समय
(ग) 1 समय (घ) 5 समय (ग)

(ii) एक क्षुल्लक भव होता है-
(क) 256 आवलिका (ख) 1 समय का
(ग) अन्तर्मुहूर्त्त का (घ) 2 आवलिका (क)

(iii) तैजस कार्मण शरीर कितने ठिकाणे पाया जाता है-
(क) 12 (ख) 24
(ग) 10 (घ) 05 (ख)

(iv) नियंठा के थोकड़े में कुल कितने द्वार हैं-
(क) 25 (ख) 26
(ग) 32 (घ) 36 (घ)

(v) सरागी नियंठा होते हैं-
(क) 4 (ख) 5
(ग) 3 (घ) 2 (क)

(vi) स्नातक में कल्प पाये जाते हैं-
(क) 5 (ख) 3
(ग) 4 (घ) 1 (ख)

(vii) छेदोपस्थापनीय संयत होते हैं-
(क) अतीर्थ में (ख) तीर्थ में
(ग) दोनों में (घ) दोनों में नहीं (ख)

(viii) यथाख्यात संयत में शरीर पाते हैं-
(क) 5 (ख) 2
(ग) 4 (घ) 3 (घ)

(ix) सामायिक चारित्र उत्कृष्ट कितने भवों में आता है-
(क) 8 (ख) 7
(ग) 5 (घ) 3 (क)

(x) मोहनीय कर्म बांधता हुआ कितने कर्मों का वेदन करता है-
(क) 7 (ख) 8
(ग) 6 (घ) 4 (ख)

(xi) कर्म बांधते हुए वेदे के कुल कितने भंग बनते हैं-
(क) 42 (ख) 6
(ग) 15 (घ) 48 (ख)

(xii) 5 स्थावर के दण्डक कितने कर्म बांधते हैं-
(क) 8 (ख) 7
(ग) 6 (घ) 7 या 8 (घ)

(xiii) पंचेन्द्रिय रत्न कितने हैं-
(क) 7 (ख) 9
(ग) 14 (घ) 5 (क)

(xiv) दण्डरत्न कहाँ उत्पन्न हाता है-
(क) चक्रवर्ती की राजधानी में (ख) आयुधशाला में
(ग) भण्डार में (घ) अन्तःपुर में (ख)

(xv) दूसरी नारकी से निकला जीव कितनी पदवियाँ प्राप्त करता है-
(क) 16 (ख) 12
(ग) 14 (घ) 15 (घ)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1=(15)**

(i) मणिरत्न चार अंगुल लम्बा दो अंगुल चौड़ा होता है। (हाँ)

(ii) चर्मरत्न चार हाथ लम्बा होता है। (नहीं)

(iii) हाथी रत्न वैताढ्य पर्वत के मूल में उत्पन्न होता है। (हाँ)

(iv) वेदनीय कर्म वेदता हुआ जीव एक कर्म ही बांधता है। (नहीं)

(v) अन्तराय कर्म बांधता हुआ जीव 8 कर्मों का वेदन करता है। (हाँ)

(vi) 1,4,5,6,7,13 तथा 14 वाँ गुणस्थान शाश्वत है। (नहीं)

(vii) छेदोपस्थापनीय संयत का जघन्य अंतर 63 हजार वर्ष का है। (हाँ)

(viii) सामायिक संयतपना एक भव में उत्कृष्ट 900 बार प्राप्त हो सकता है। (हाँ)

(ix) यथाख्यात संयत अनाहारक ही होते हैं। (नहीं)

(x) पुलाकादि पाँच नियंठा लोक के असंख्यातवें भाग में होते हैं। (हाँ)

(xi) केवली समुद्घात चौदहवें गुणस्थान में होती है। (नहीं)

(xii) निर्ग्रन्थ में समुद्घात नहीं होती है। (हाँ)

(xiii) आहारक शरीर चौदह पूर्वधर मुनियों में से भी किसी-किसी के ही होता है। (हाँ)

(xiv) औदारिक शरीर प्रायोग्य बंध औदारिक शरीर नामकर्म के उदय से होता है। (हाँ)

(xv) तीन विकलेन्द्रिय में उत्कृष्ट देशबंध अपनी-अपनी स्थिति के अनुसार होता है। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए:- **15x1=(15)**

(i)	एक मुहूर्त्त	(क) आहारक	1,67,77,216 आवलिका
(ii)	तेजस् कार्मण शरीर	(ख) उत्कृष्ट सात बार	देशबंध
(iii)	स्नातक	(ग) अबंधक	अवेदी
(iv)	कषाय कुशील	(घ) 8 कर्मों का वेदन	पहले 4 संयम
(v)	निर्ग्रन्थ	(च) 8 कर्मों का बंध	एक संयम स्थान
(vi)	बकुश	(छ) वासुदेव	प्रथम तीन लेश्या (अतिम 3 लेश्या)
(vii)	सूक्ष्म सम्पराय संयत	(ज) जघन्य दो हाथ	साकार उपयोग
(viii)	सामायिक संयत	(झ) सातवीं नरक	आहारक
(ix)	परिहार विशुद्ध संयतपना	(य) 1,67,77,216 आवलिका	उत्कृष्ट सात बार
(x)	14 वाँ गुणस्थान	(र) देशबंध	अबंधक
(xi)	1-10 गुणस्थान	(ल) अवेदी	8 कर्मों का वेदन
(xii)	आयु कर्म बांधता हुआ	(व) पहले 4 संयम	8 कर्मों का बंध
(xiii)	मोटी पदवी	(क्ष) एक संयम स्थान	वासुदेव
(xiv)	केवली व साधु	(त्र) प्रथम तीन लेश्या	जघन्य दो हाथ
(xv)	सात पदवी वाला	(ज्ञ) साकार उपयोग	सातवीं नारकी

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1=(15)

(i)	मुझे चौदह पदवी प्राप्त हो सकती है।	मनुष्य
(ii)	मुझे वेदता हुआ जीव 7,8,6 व 1 कर्म बांधता है या अबंधक होता है।	वेदनीय
(iii)	मुझमें जाने वाले जीव के वैक्रिय द्विक की उद्वेलना प्रारंभ हो जाती है।	वायुकाय
(iv)	मुझमें उत्पत्ति के प्रथम समय में वैक्रिय शरीर का सर्वबंध होता है।	नारकी देवता
(v)	हमारा देश बंध ही है, सर्वबंध नहीं।	तैजस् कार्मण शरीर
(vi)	मैं सम्पूर्ण संसार काल में चार बार से अधिक प्राप्त नहीं होता हूँ।	आहारक शरीर
(vii)	मुझमें विशेष विषय का उद्देश्य करके विश्लेषण किया जाता है।	उद्देशक
(viii)	हम 13 सर्वघाती प्रकृति और उनकी सीमा वाले 9 कषायों की ग्रन्थि से रहित होते हैं।	निर्ग्रन्थ
(ix)	हमारे अन्दर तीनों ही प्रकार के परिणाम पाये जाते हैं।	छठा-सातवाँ गुणस्थान
(x)	मेरे अन्दर प्रदेशोदय की नियमा है।	विपाकोदय
(xi)	छह प्रकार के नियंठों में सबसे थोड़े हम है।	निर्ग्रन्थ
(xii)	मेरे अन्दर दो वेद पाये जाते हैं।	परिहार विशुद्धि संयत
(xiii)	मेरे क्षेत्र में अस्थित कल्प होता है।	महाविदेह
(xiv)	मेरे अन्दर दो नियंठा पाये जाते हैं।	यथाख्यात संयत
(xv)	मुझमें संज्वलन कषाय का एक भेद पाया जाता है।	सूक्ष्म सम्पराय संयत

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 8x2=(16)

(i) क्षुल्लक भव औदारिक के दस दण्डकों में हो सकने के प्रमाण दीजिए।
भगवती सूत्र शतक 24 (गमा), जीवाभिगम सूत्र की सातवीं अष्टविध प्रतिपत्ति, पाँचवें कर्मग्रन्थ की गाथा 40-41, अभिधान राजेन्द्र कोष आदि।

(ii) देव-नारकों में उत्तर वैक्रिय करने पर भी वैक्रिय शरीर का देशबंध ही क्यों माना जाता है?
क्योंकि पहले भी वैक्रिय शरीर के योग्य पुद्गलों को ग्रहण करते हैं और उत्तर वैक्रिय में भी वैक्रिय शरीर के पुद्गलों का ही ग्रहण करते रहते हैं, इस कारण से उत्तर वैक्रिय करने पर भी वैक्रिय शरीर का सर्वबंध नहीं मानकर देशबंध ही माना जाता है।

(iii) बकुश किसे कहते हैं ?
बकुश अर्थात् चित्तकबरा। जैसे-पूलों में से घास दूर कर दिया जाए और ऊंबियों (बालों) का ढ ` र किया जाए तो उसमें यद्यपि पहले की अपेक्षा कचरा बहुत कम हो गया है, फिर भी धान्य की अपेक्षा कचरा अधिक है, इसी प्रकार जो मुनि गुण-अवगुण दोनों के धारक हो, वे बकुश निर्ग्रन्थ कहलाते हैं।

(iv) दस कल्पों में से प्रथम आठ कल्पों के नामोल्लेख कीजिए।
1. अचेल कल्प 2. औद्देशिक कल्प 3. राजपिण्ड 4. शय्यातर 5. मास कल्प
6. चातुर्मास कल्प 7. व्रत 8. प्रतिक्रमण।

(v) पाँचों संयतों में परिणाम द्वार का कथन कीजिए।

सामायिक, छेदोपस्थापनीय और परिहारविशुद्धि संयत में परिणाम पावे तीन- हीयमान, वर्द्धमान, अवस्थित।

सूक्ष्म सम्पराय संयत में परिणाम पावे दो- वर्धमान, हीयमान।

यथाख्यात संयम में परिणाम पावे दो- वर्धमान ओर अवस्थित।

(vi) पाँचों संयतों के अल्पबहुत्व द्वार का कथन कीजिए।

1. सबसे थोड़े सूक्ष्म सम्पराय संयत (पृथक्त्व सौ होने से)
2. उससे परिहार विशुद्धि संयत संख्यात गुणा(पृथक्त्व हजार होने से)
3. उससे यथाख्यात संयत संख्यात गुणा (पृथक्त्व करोड़ होने से)
4. उससे छेदोपस्थापनीय संयत संख्यात गुणा (पृथक्त्व सौ करोड़ होने से)
5. उससे सामायिक संयत संख्यात गुणा (पृथक्त्व हजार करोड़ होने से)

(vii) छेदोपस्थापनीय चारित्र के भेदों का अर्थ लिखिए।

1. सातिचार- भरत-ऐरवत क्षेत्र में पहले व अंतिम तीर्थंकर के तीर्थ में किसी साधु की दीक्षा पर्याय का छेद (कमी) किया जावे अथवा उसे नई दीक्षा प्रदान की जावे, उसे सातिचार छेदोपस्थापनीय चारित्र कहते हैं।

2. निरतिचार- इत्वरकालिक सामायिक चारित्र वाले शिष्यों को जब बड़ी दीक्षा (महाव्रतों में आरोपण करना) दी जाय तथा 23 वें तीर्थंकर के तीर्थ के साधु-साध्वियों को जब 24 वें तीर्थंकर के तीर्थ में 5 महाव्रतों में आरोपित किया जावे, उसे निरतिचार छेदोपस्थापनीय चारित्र कहते हैं।

(viii) किन-किन सात बोल वालों का संहरण नहीं होता है?

1. संयमशीला साध्वी 2. अवेदी 3. परिहारविशुद्धि चारित्री 4. पुलाक साधु
5. अप्रमत्त संयत 6. चौदह पूर्वधारी और 7. आहारक लब्धि वाले साधु।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3=(24)

(i) औदारिक शरीर के 12 बोलों के देशबंध की स्थिति कितनी है ?

समुच्चय जीव, तिर्यंच पंचेन्द्रिय और मनुष्य, इन तीन बोलों की जघन्य स्थिति 1 समय की, उत्कृष्ट तीन पल्योपम में एक समय कम। समुच्चय एकेन्द्रिय और वायुकाय की स्थिति जघन्य एक समय की, उत्कृष्ट अपनी-अपनी स्थिति से एक समय कम। चार स्थावर और तीन विकलेन्द्रिय की स्थिति एक क्षुल्लक भव में तीन समय कम, उत्कृष्ट अपनी-अपनी स्थिति में एक समय कम।

(ii) औदारिक शरीर के सर्वबंध का अन्तरकाल तीन समय कम क्षुल्लक भव कैसे होता है ?

कोई जीव दो समय की विग्रहगति से औदारिक शरीरधारी जीवों में उत्पन्न हुआ तो वह विग्रहगति के दो समय में अनाहारक रहता है तथा तीसरे समय में सर्वबंधक होता है। यदि क्षुल्लक भव तक जीवित रह कर मृत्यु को प्राप्त हो गया और ऋजुगति से औदारिक शरीरधारी जीवों में उत्पन्न हुआ तो वहाँ पहले समय में वह सर्वबंधक होता है। इस प्रकार सर्वबंध का सर्वबंध के साथ जघन्य अन्तर तीन समय कम क्षुल्लक भव ग्रहण होता है।

(iii) कषाय कुशील की परिभाषा लिखकर, उसके पाँचों भेदों का नामोल्लेख कीजिए।

कषाय कुशील- संज्वलन कषाय के उदय से चारित्र में पूर्ण निर्मलता नहीं होने से कषाय कुशील कहलाता है। इसके पाँच भेद हैं-1. ज्ञान, 2. दर्शन, 3. चारित्र, 4. लिंग और 5. यथा सूक्ष्म।

(iv) निर्ग्रन्थ और स्नातक का संहरण किस अपेक्षा से माना जाता है?

प्रमादी साधु जो बकुश, प्रतिसेवना कुशील, कषाय कुशील हो (छठा गुणस्थानवर्ती) उसका संहरण (देवतादि द्वारा कौतुकता, वैर भावना, दुःख देने आदि के निमित्त से जबरदस्ती उठाकर अन्यत्र ले जाना संहरण कहलाता है) होता है, बाद में वह प्रमादी साधु अपने विशुद्ध अध्यवसायों से संहरण किये गये क्षेत्र (अकर्मभूमिज) में ही निर्ग्रन्थ एवं स्नातक बन जाता है। इस कारण से निर्ग्रन्थ और स्नातक का पूर्व पर्याय में संहरण माना जाता है।

(v) सामायिक चारित्र के दो भेदों को स्पष्ट कीजिए।

1. इत्वरकालिक- इत्वर अर्थात् अल्पकाल के चारित्र को इत्वरकालिक समायिक चारित्र कहते हैं।

2. यावत्कथिक- यावत्कथिक अर्थात् जीवन भर के लिए। जो सामायिक चारित्र जीवन पर्यन्त के लिए स्वीकार किया जाता है, उसे यावत्कथिक सामायिक चारित्र कहते हैं।

(vi) पाँचों संयतों के आकर्ष द्वार को लिखिए।

1. सामायिक संयतपना एक भव में जघन्य एक बार, उत्कृष्ट पृथक्त्व सौ बार प्राप्त होता है। अनेक भवों में जघन्य दो बार उत्कृष्ट पृथक्त्व हजार बार (7200) प्राप्त होता है।

2. छेदोपस्थापनीय संयतपना एक भव में जघन्य एक बार, उत्कृष्ट 120 बार। अनेक भवों में जघन्य दो बार, उत्कृष्ट 900 से अधिक तथा 1000 से कम अर्थात् 960 बार।

3. परिहारविशुद्धि संयतपना एक भव में जघन्य एक बार, उत्कृष्ट तीन बार। अनेक भवों में जघन्य दो बार, उत्कृष्ट 7 बार।

4. सूक्ष्म सम्पराय संयतपना एक भव में जघन्य एक बार, उत्कृष्ट चार बार। अनेक भवों में जघन्य दो बार, उत्कृष्ट 9 बार।

5. यथाख्यात संयतपना एक भव में जघन्य एक बार, उत्कृष्ट दो बार तथा अनेक भवों में जघन्य दो बार, उत्कृष्ट 5 बार प्राप्त होता है।

(vii) दसवें गुणस्थान में 6 तथा 5 कर्मों की उदीरणा किस अपेक्षा से समझनी चाहिए?

क्योंकि क्षपक क्षेणि वाले के जब तक मोहनीय कर्म की स्थिति एक आवलिका से अधिक शेष बचती है, तब तक उसकी उदीरणा होती है इसलिए 6 कर्मों की उदीरणा होती है।जब एक आवलिका अथवा उससे कम स्थिति शेष बचती है तब मोहनीय कर्म की उदीरणा रूक जाती है, अतः 5 कर्मों की उदीरणा ही होती है।

(viii) पुलाकपने में मरण नहीं होने पर भी मारणान्तिक समुद्घात किस अपेक्षा से समझनी चाहिए?

क्योंकि मारणान्तिक समुद्घात से निवृत्त होने के बाद पुलाक साधु अपनी शेष रही अन्तर्मुहूर्त की स्थिति में कषाय कुशीलादि अवस्था के परिणामों को प्राप्त कर लेता है और उसी कषाय कुशीलादि के सद्भाव में मरण को प्राप्त हो जाता है।